योगानंद के लिए इमेजिनेशन पॉवर को बढ़ायें

आत्मा में सोचने की, निर्णय करने की और व्यक्त करने की योग्यता सदा होती है। अगर योग में हमें नया-नया अनुभव नहीं हो रहा है और हम आगे नहीं बढ़ रहे हैं, हम योग की गहराई में गोते नहीं लगा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि हम अभी तक इसी दुनिया में हैं, सिर्फ हम योग-योग कह रहे हैं परंतु करते नहीं हैं। जहाँ हमें जाना चाहिए वहाँ नहीं जा रहे हैं और जो करना चाहिए वो नहीं कर रहे हैं। इसका एक कारण यह है कि हम जिसके साथ योग लगाना चाहते हैं और जिस स्थान को याद करना चाहिए उसका चित्रण नहीं करते। अगर हम परमधाम में बाबा को याद करना चाहते हैं तो पहले उस परमधाम का चित्रण मन में निर्मित करना चाहिए, उसमें बाबा(परमपिता शिव परमात्मा) का चित्रण करना चाहिए। क्योंकि बाबा को या घर को हम इन स्थूल आँखों से तो देख ही नहीं सकते। उनको तो मन की आँख अथवा बुद्धि के नेत्र से देख सकेंगे। इसका चित्र पहले हम अपने मन में निर्मित करें और उसको देखते रहें। इसको ही चित्रण अर्थात् इमेजिनेशन कहते हैं। इमेज अर्थात् चित्र। इमेजिनेशन माना चित्रण करना, चित्र बनाना। इमेजिनेशन का अर्थ कल्पना करना नहीं है, अन्दाज़ा लगाना नहीं है। इमेजिनेशन माना मन में किसी वस्तु या व्यक्ति का चित्र बनाना। कई लोगों को तो चित्रण करना आता ही नहीं है। क्यों नहीं कर सकते? क्योंकि मन में लीकेज है, योग में व्यर्थ संकल्पों के विघ्न आते हैं। इसके अलावा वे दूसरों को कई तरह के दुःख देते रहते हैं, उन्हें सताते रहते हैं। दूसरों को देख ईर्ष्या करते रहते हैं, उन्हें आगे बढ़ने नहीं देते, कुछ-न-कुछ बाधा डालकर उन्हें तंग करते रहते हैं। इसलिए वे न योग में चित्रण कर सकते हैं और न योग लगा सकते हैं। मन में ऐसे खराब विचार, भावनायें होने के कारण वे चित्रण नहीं कर सकते। हमारा इमेजिनेशन हमारे संकल्पों से बँधा हुआ है। अगर आपको योग में अच्छे-से-अच्छे अनुभव करने हैं तो इन सब चीज़ों को छोड़ दीजिये। दूसरों के बारे सोचना बंद कर दीजिये। वो कुछ भी करें, अपने कर्मों के लिए वो ही ज़िम्मेवार हैं, हम काहे को झंझट में पड़ें? एक जगह तो ऐसी है जहाँ न्याय होता है। हम काहे की चिंता करें? हम अपना काम करें। हम क्यों दूसरों को देखें? योग में अच्छे अनुभव होने के लिए डिटैचमेंट धारण करो कि मेरा कुछ भी नहीं, सब-कुछ बाबा का है, बाबा का दिया हुआ है। तब देखो योग-अग्नि धधकेगी, प्रज्वलित होगी।

ब्र.कु. गंगाधर

योगानंद के लिए मन की स्थिरता चाहिए और प्रेरणा शक्ति अर्थात् प्रेरित होने की कला भी। रूखे-सूखे से काम नहीं चलेगा। जब तक प्रेरित नहीं होंगे कि मुझे योग में आनन्द, लाइट और माइट का अनुभव करना है, अपनी मंज़िल पर पहुँचना है, सिद्धि प्राप्त करनी है तब तक आप योग में अनुभव नहीं कर सकते। जितना हम प्रेरित होंगे उतना हमारे योग की गुणवत्ता भी श्रेष्ठ होगी। अनुभव हमेशा प्रेरणाओं और भावनाओं के आधार से होते हैं। अगर आपमें भावनायें नहीं हैं, प्रेरणायें नहीं हैं तो अनुभव नहीं होगा। चलती-फिरती लाश को अनुभव नहीं होता, ज़िन्दा-दिल आदमी को अनुभव होगा। इसलिए हमारे जीवन में प्रेरणायें होनी चाहिए। जो भी महान् पुरूष बने हैं, वीर-शुर बने हैं वे प्रेरित थे, प्रेरणा के कारण उनमें समाज-कल्याण की या देश प्रेम की भावनायें जाग्रत हुईं। तब जाकर उन्होंने महान् कार्य किये। प्रेरणा और भावनाओं से व्यक्ति कर्त्तव्य-उन्मुख हो जाता है, नहीं तो वह किंकर्त्तव्य विमूढ हो जाता है। किंकर्त्तव्य विमूढ माना उसको यह समझ नहीं है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। इसमें वह विमूढ है। रोज़ उसके मन में प्रश्न उठेंगे कि यह करना है या नहीं करना है। यह पैसे यज्ञ में लगाऊँ या न लगाऊँ? बाबा के लिए ज़मीन व मकान दूँ या न दूँ? - यह दुविधा उसके मन में नाचती रहती है। अगर आप ऊँचे स्तर का जीवन जीना चाहते हैं तो आपका ऊँची, उद्दात् प्रेरणाओं से, भावनाओं से प्रेरित होना बहुत ज़रूरी है।

सदा खुश रहने की साधना व साधन है पवित्र संकल्प

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

इंसान बहुत जल्दी संग के रंग में अन्धकार में आ जाता है। पवित्रता क्या है, उसे यह पता ही नहीं है। अपवित्रता क्या है? पता नहीं है क्योंकि कलियुगी अन्धियारा है। पवित्र इतने बनें जो हमारे पाप कटें, पुण्य आत्मा बनें। इतना पवित्रता का बल चाहिए। जैसे कोई-कोई कीड़ा अच्छे को भी खराब कर देता है और भ्रमरी बुरे को अच्छा बना देती है। तो कभी किसी को बुरा देखना यह भ्रमरी का काम नहीं है, ब्राह्मणी का काम नहीं है। बदलना उसका काम है, औरों को बदलने में मदद करना उसका काम है। हमारे पास इतनी शुभ भावना शुभ कामना हो जो हमारे लिए अगर कोई अशुभ सोचे तो भी वो हमें लगेगा नहीं क्योंकि हरेक के लिए शुभ भावना का भण्डारा भरपूर है।

हमारे प्रति कोई कैसे भी सोचता है, आपेही ठीक हो जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है, पर हम अपनी शुभ भावना में कोई कमी नहीं करेंगे। यह हमारे लिए शान नहीं है। शान यह है हम अपनी भावनाओं को सदैव सबके लिए बाबा जैसी शुभ बनायें। सबके प्रति श्रेष्ठ कामना हो, कोई स्वार्थ न हो। वह आत्मा जैसे बाबा की दृष्टि से बदल जाए, यह कामना है। बाकी हम क्या दृष्टि देंगे। जैसे बाबा दृष्टि देता है तो तुम बाबा से दृष्टि लो- यह भावना है। हम दृष्टि नहीं देंगे, जैसे बाबा मेरे को दृष्टि से चला रहा है, ऐसे आप भी बाबा की दृष्टि में रहो तो आपके ऊपर किसकी नज़र नहीं पड़ेगी। न आपकी नज़र औरों पर पड़ेगी।

अगर भोजन पर किसी की खराब नज़र पड़ जाती है तो वह खाना हम नहीं खा सकते क्योंकि उसमें इच्छा होगी, कोई भी निगेटिविटी होगी तो उसका प्रभाव शरीर को बीमार कर देगा इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं बच्चे भोजन का भोग लगाके फिर खाओ और पहले सब खायें, फिर तुम खाओ, यह सभ्यता भी यहाँ बाबा सिखा रहे हैं। ऐसे नहीं मैं खा लूँ और किसी की इच्छा हो खाने की, वो खाना अन्दर नहीं जायेगा, जायेगा तो भी हज़म नहीं होगा। तो हम खाऊं, हमको मिलें... नहीं, सबको मिलें, सब खायें।

मुझे अन्दर से सच्ची दिल से साहेब को राज़ी रखने का पुरुषार्थ करना है। साहेब तब राज़ी होता है, जब हम उनके डायरेक्शन, उनकी श्रीमत, उनके इशारे प्रमाण चलते हैं। तो हमारी बुद्धि में क्लीयर डायरेक्शन्स हों, तब हम टाइम पर सबकुछ कर सकेंगे। दूसरे का भी टाइम बचाए, उसको मदद कर सकते हैं तो इतना तो सीखना पड़ेगा।

आजकल बाबा हर बात में कहता है- विघ्न-विनाशक बनने की डिग्री पास करो। विघ्न आवे ही नहीं,आया तो यह खेल है, क्या बड़ी बात है। खेल में खेल तो होता ही है। पर खेल समझ करके खुश रहें। उदास न रहें, थोड़ी उदासी आई माना ड्रामा का ज्ञान नहीं है, अपवित्रता आई। अपवित्रता ने उदासी लाई तो मेरी खुशी कम कर दी। भगवान मुझे खुशी देवे, तो सदा खुश रहने की साधना व साधन है पवित्र संकल्प। तो अपने संकल्प को चेक करो, अपने ऊपर मेहर करके किसी के भी भाव-स्वभाव में नहीं आओ।

यह अच्छा है, यह खराब है...यह भी अपवित्र संकल्प है, जिसने जिसको अच्छा कहा वो उसके ऊपर आशिक है और उसने समझा हाँ यही मुझे अच्छा समझते हैं तो वो हुआ आशिक, तो उन दोनों का माशूक छूट गया। अपने आपको ज़रा ऊपर से बाबा की तरह देखो तो लगेगा कि यह दोनों आपस में आकर आशिक हो गये हैं। सबका माशूक वो रह गया, उन जैसा अच्छा कोई नहीं, यह भूल गया। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं तो इतनी ही पवित्रता बाबा हमारे से चाहता है।

संकल्प ऐसे हों जो स्व और सेवा दोनों इक्ट्ठे हो जायें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

त्याग वृत्ति से अनासक्त वृत्ति होती है और त्याग वृत्ति, वैराग्य वृत्ति से होती है। अनासक्त वृत्ति, श्रेष्ठ वृत्ति फिर उपराम वृत्ति, उस वृत्ति से वायुमण्डल बनता है, यह स्टेप्स हैं। ज़रा भी वैराग्य कम है, कोई हद के व्यक्ति, वैभव से राग है, तो न त्याग है, न तपस्या है। सेवा भले है।

अन्त समय साक्षात्कार किसका होगा? त्याग, तपस्या मूर्ति का होगा। भक्ति में पहले लाइट आती है, तब साक्षात्कार होता है, लाइट पहले देह से अलग कर देती है, फिर साक्षात्कार होता है।

एक भाई बहुत भक्त था, उसने न भजन गाया, न पूजा पाठ किया पर शक्ल चमक रही थी। वह मेरे बाप समान था। मैंने कहा आपने भजन भी नहीं किया, कुछ भी नहीं किया,तो आपने क्या किया? चेहरा ऐसा कैसे चमक रहा है। कहा मैं सुबह को उठकर विष्णु का ध्यान करता हूँ, भक्ति हो तो ऐसी। न हवन, न पाठ, न पूजा कुछ नहीं किया।

बाबा शिक्षा, समझानी, सावधानी हर मुरली में देता है। कोई मुरली ऐसी नहीं होती जिसमें शिक्षा, समझानी, सावधानी न हो। बाबा की कई बातें दृश्य रूप में सामने आती हैं, बच्ची तुम यह नहीं कर सकती हो। जी बाबा। बाबा साधारणता में नहीं ले आना चाहता है, महान आत्मा बनाने चाहता है।

बाबा के पहले-पहले बोल हैं- सी फादर, फॉलो फादर। सारे यज्ञ की हिस्ट्री में एक क्षण,पल भी निष्फल होने नहीं दिया है। सी फादर और फॉलो फादर किया है। बाबा ने कहा लाइट रहो, माइट खींचते रहो, तो ऑटोमेटिक फरिश्ता रूप नज़र आयेगा, अपने को फीलिंग आयेगी, धरती पर पांव नहीं हैं। उड़ती कला है। चढ़ती कला का समय पूरा हो गया। चढ़ती कला में थकावट होती है तो थोड़ा रूक जाते हैं। यह भी अपनी स्थिति में, चार्ट में देखें। थोड़ी भी थकावट मन में हुई सो तन पर आई। मन में क्यों आई? कई प्रकार के संकल्पों से आई। अभी बाबा बोले व्यर्थ संकल्पों को खत्म करो, व्यर्थ संकल्प हमको क्यों आयें! संकल्प से सेवा हो रही है, संकल्प ऐसे हों जो स्व और सेवा दोनों इक्ट्ठे हो जायें। संकल्प में स्व, स्व में बाबा है, उसमें सेवा समाई पड़ी है। इतना ध्यान अपने ऊपर रखेंगे तो बाबा साथी बनकर, साक्षी होकर प्ले करने में मदद करेगा। याद करने की मेहनत नहीं है, पर बाबा के साथ का अनुभव औरों को सुख देता है। मेरे में जो कमी कमज़ोरी है वह मर्ज हो जाए,जो मेरा साथी है, वह दिखाई दे।

बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है-एक दो तो दस पाओ

हम एक तरफ राजऋषि हैं, दूसरे तरफ संगम के सिंहासन पर बैठने वाली महारानियां। बाबा ने कहा है कि भविष्य के सिंहासन पर तो राजा-रानी बैठेंगे लेकिन मेरा दिल तख्त इतना विशाल है जो मेरे इस दिल तख्त पर सभी बच्चे बैठ सकते हैं, जिसने इस संगम पर सिंहासन जीत लिया उसने विश्व का सिंहासन जीत लिया। तो हरेक अपने दिल से पूछे कि मैंने दिलाराम के दिल का सिंहासन जीत लिया है? दिखाते हैं लव-कुश ने राम को जीता। यह भी हमारे सामने एक दृष्टान्त है। हम बच्चों ने दिलाराम के दिल तख्त को जीता है। दिलाराम बाप की दी हुई सेवा पर दिल से तत्पर हैं। दिल भी हमारी बुद्धि के अन्दर आती। जैसे प्राण माना आत्मा, वैसे दिल माना आत्मा।

गीता के महावाक्य हैं- "नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप"। मेरा यह सवाल उठता नष्टोमोहा बन सर्विस पर आये हैं या नष्टोमोहा बनने सर्विस पर आये हैं? स्मृति-स्वरूप बनकर मैंने सोचा यह पुरानी दुनिया क्या है, ये जीवन क्या है, इसमें मोह क्या रखें? ऐसा समझकर आये या मोह नष्ट करने के लिए आये?

मैंने स्मृति स्वरूप होकर स्वयं को सेवा में लगाया है, माना ज्ञान स्वरूप होकर सेवा में लगे हैं। उनके साथ ही अपने सर्व सम्बन्ध, माता, पिता, बन्धु... आदि सब हैं। बाबा कहने से बाबा के गुण, शक्ति, सारी महिमा सामने आ जाती है। बाप भगवान है माना नॉलेजफुल है, सर्वशक्तिवान है अर्थात् सर्वशक्तियों का वर्सा देने वाला है। ऐसे बाबा को सर्व सम्बन्धों से जानकर, सोच-समझकर मैं समर्पित हुई हूँ या पांव इस तरफ रखा सिर दुनिया तरफ है? भक्ति मार्ग में सिर झुकाते हैं, दण्डवत प्रणाम करते हैं, माना पूरा ही समर्पण करते हैं। तो स्वयं से पूछो- मैं पूरी झुकी हूँ अर्थात् पूरा समर्पित हूँ?

वरदान तब मिलता है जब पूरा दान करते हैं, बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है, एक दो तो दस पाओ, धरती को एक दाना देते हैं तो 100 देती है, अब पूछो मैं पूरा दानी बना हूँ? भक्ति में भी ईश्वर अर्पणम या कृष्ण अर्पणम करते हैं, तुम किसी मनुष्य को दान नहीं देते, तुम सब मुझ शिवबाबा को दान करते हो तब मेरे से तुम्हें वरदान मिलता है। ज्ञान का, शक्ति का, गुणों का, यह खज़ाना तुम बांटते हो। जितना-जितना औरों को बांटते उतना स्वयं भी भरपूर होते हैं। एक दिया 100 पाया। इतना जमा होता है, जिसे कहते हैं वरदान मिलता है। तो बाबा हमें दान देकर फिर हमसे दान कराता है। फिर वह और ही 100 गुणा भरतू होता है। तो जो भरतू होता है वह है वरदान।

जैसे किसी गरीब को दान दिया उसने सिगरेट पी लिया तो हमारे ऊपर बोझ चढ़ा, इसी तरह बाबा ने मुझे दान दिया और मैंने बाबा के मिले दान का उपयोग अगर ठीक नहीं किया तो वरदान की बजाए श्राप हो जाता है। यह निर्णय शक्ति चाहिए। मान लो हमने किसको मुरली सुनाई, ज्ञान दिया, बाबा की याद का अनुभव कराया, जिससे आत्मा को बड़ी खुशी हुई, उसने हमें दुआ दी, यहाँ तक तो ठीक, लेकिन जब मैंने कहा ये मेरे से बहुत प्रभावित हुआ, बहुत खुश हो गया, तो यह जमा नहीं किया, स्वीकार कर गंवा दिया। अहम भाव आया तो बैलेन्स बराबर। जो जमा किया वह माइनस हो गया, खत्म हो गया।

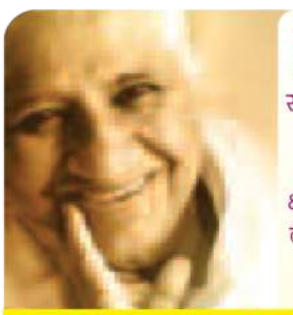

ऐसे ही मैं कोई की बहुत मीठी सेवा कर रही हूँ, बहुत अच्छी तरह समझाती हूँ, समझाते-समझाते आत्मा की स्थिति में स्थित हो जाती हूँ, उसे भी अनुभव कराया, शान्ति का लाइट अवस्था का साक्षात्कार कराया, परन्तु दूसरे क्षण उसने मेरे देह-अभिमान की अवस्था देखी, तो एक तरफ हाइएस्ट स्टेज, दूसरे तरफ एक क्षण में लोवेस्ट स्टेज। तो क्या सोचेगा?

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी